Sweety

NOTEBOOK

128 No. Rs. 3-00

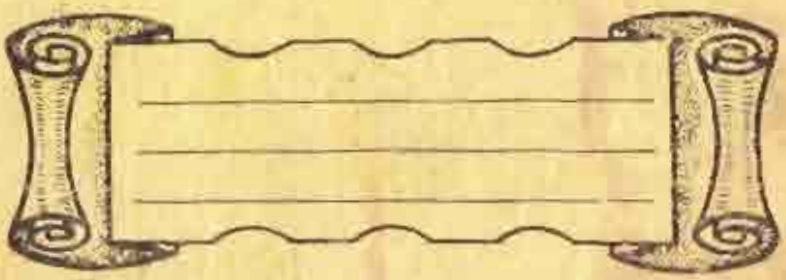

N 16

Responsible Journalism

Edited by Deni Elliott.

—

Sage Publications – 1986

—

नदी के प्रवाह में बुद्बुद जैसे

नदी के प्रवाह में बुद्बुद जैसे
राज-मार्ग में परछाइयां जैसे
अनजाने हम पास आये — अब
दूर हो जावें — यह ईश्वर-नियोग।

अनजाने हम पास आए — तुरंत
दो शरीरों में एक हृदय स्पन्दित हुआ
उस में ज्वलित हुआ, घृत-दीप-सम
एक दर्द, एक नशा, एक विह्वलता।

एक मुस्कान चार होठों में
एक अश्रुबिन्दु चार आंखों में
एक विस्मृति, एक कम्पन, एक शौर्य
एक भय — संसारवाला एक आदमी।

नदी के प्रवाह में कुछेकुछ जैसे
रेलगाड़ी में परछाइयाँ जैसे
पास आकर तुरंत अनजान
दूर हो जाएँ - यह हमारा भाग्य।

हे हृदय! हृदयों में अंकुरित
हे शोक! हे ऊष्म के निःश्वास!
हे प्रिय - विप्रिय - राग - द्वेष -
आदर - विस्मय - भय - लज्जाएँ!
अब तुम आपस में बिछुड़ दूर जाओ ~~दूर होते जाओ~~
अपरिचित - पथों से
एक भी साथी के बिना
शून्यता में निरंतर गाते जाते रहो ?

असीम विनम्रता से
गाते - पीकर झुकता - से

अकेला और अंधेरा जाने बिना
एक भाग - यह नित्य वियोग।